بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 25
Issue - 01

राह-ए-ईमान

जनवरी
2023 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब पृष्ठ).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 23.12.2022).....8
7. दान पुण्य तथा पश्चात्ताप से मुसीबत टल जाती है.....12
8. तहरीक जदीद के 89वें साल के आरंभ का भव्य ऐलान.....20
9. हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह का अमरीका दौरा अक्टूबर 2022.....22
10. पत्रिका के बारे में कृपया अपना फीडबैक (प्रतिक्रिया) अवश्य दें.....32
11. बैअत के साथ अच्छे कर्म करना भी आवश्यक है.....32

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

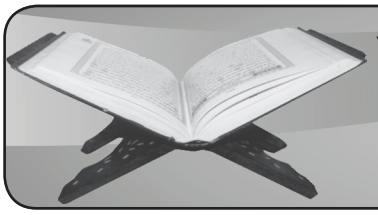

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ ---وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا

अनुवाद:- और तेरे रब्ब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की उपासना न करो और माता पिता से उपकार पूर्वक बर्ताव करो। यदि तेरे सामने उन दोनों में से कोई एक अथवा वे दोनों ही वृद्धावस्था की आयु को पहुँच जाएँ तो उन्हें "उफ़" तक न कह और उन्हें झिड़क नहीं ओर उन्हें विनम्रता और सम्मान के साथ संबोधित कर।

और उन दोनों के लिए दया की भावना से विनम्रता (नर्मी) के पर झुका दे और तू कह (अर्थात दुआ कर) कि हे मेरे रब्ब! इन दोनों पर दया कर जिस प्रकार इन दोनों ने बचपन में मेरा पालन-पोषण किया। (बनी इस्राईल- 24-25)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि] से रिवायत है बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:- एक व्यक्ति रास्ते में जा रहा था उसने एक कांटेदार टहनी पड़ी हुइ देखी, उसने उसको हटा दिया। अल्लाह ताआला ने उसकी इस नेकी को इतना पसंद फ़रमाया कि उसे माफ़ कर दिया। (तिरमिज़ी)

भाव:- इसमें भाव यह है कि रास्ते से हानिकारक वस्तु को हटाना एक बहुत बड़ी नेकी है क्योंकि इससे बहुत सी दुर्घटनाएँ हो जाती हैं, एक छोटे से पत्थर से एक मोटर साइकल पर सवार पूरा परिवार दुर्घटना का शिकार हो जाता है और कई बार लोग मर भी जाते हैं। इसलिए सामान्यत: एक छोटी सी नज़र आने वाली बात अपने अन्दर बहुत बड़ी हिकमत रखती है। अल्लाह तआला हमें इसका पालन करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

अनुवाद: हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि] से रिवायत है बयान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:- कि जो व्यक्ति लोगों का धन्यवाद नहीं करता वह अल्लाह का भी धन्यवाद नहीं करता। (तिरमिज़ी)

☆ ☆ ☆

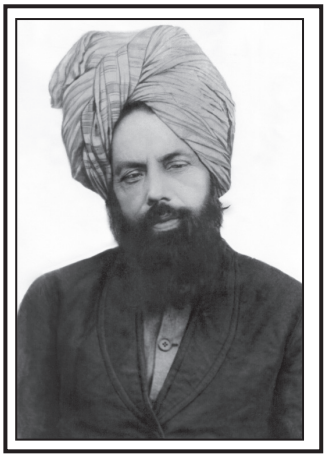

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

''मानव स्वभाव एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसके एक भाग की शाखाएं मलिनता एवं मूत्र के गढ़े में डूबी हैं तथा दूसरे भाग की शाखाएं एक ऐसे पक्के जलकुण्ड (हौज़) में पड़ती हैं जो केवड़ा, गुलाब तथा अन्य उत्तम सुगन्धों से भरा है। प्रत्येक भाग की ओर से जब कोई वायु चलती है तो दुर्गन्ध या सुगन्ध को जैसी अवस्था हो फैला देती है। इसी प्रकार हर ओर से काम भावनाओं की वायु दुर्गन्ध प्रकट करती है और रहमानी सुगन्धों की वायु गुप्त सुगंध को प्रकटन एवं प्रतिबिम्ब का लिबास पहनाती है। अत: यदि रहमानी वायु के चलने में जो आकाश से उतरती है बाधा हो जाए तो मनुष्य प्रत्येक ओर से काम भावनाओं की प्रचंड एवं तीव्र हवाओं के थप्पड़ खाकर तथा उनकी दुर्गंधों के नीचे दब कर ख़ुदा तआला से इस प्रकार मुख फेर लेता है कि साक्षात् शैतान बन जाता है और नर्क के सबसे निचले तल में गिराया जाता है तथा उसके अन्दर कोई नेकी नहीं रहती और कुफ़्र, पाप, दुराचार, दुष्कर्म तथा समस्त कमीनगियों के विषों से अन्तत: तबाह हो जाता है और उसका जीवन नारकी होता है। मृत्योपरान्त नर्क में गिरता है और यदि ख़ुदा तआला की कृपा सहायक हो तथा ख़ुदा की सुगंधें उसके शुद्धिकरण एवं सुगंधित करने के लिए आकाश से चलें और उसकी आत्मा (रूह) को अपने विशेष प्रशिक्षण (तरबियत) से प्रति क्षण प्रकाश, ताज़गी तथा पवित्र शक्ति प्रदान करें तो वह उच्च शक्ति से शक्ति पाकर इतना ऊपर की ओर खींचा जाता है कि फ़रिश्तों के स्थान से भी ऊपर चला जाता है। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य में नीचे गिरने का भी तत्त्व है और ऊपर उठाए जाने का भी। किसी ने इस बारे में सच कहा है -

हज़रते इन्सां कि हद्दे मुश्तरिक़ रा जामे अस्त,
मी तवानद शुद मसीहा मी तवानद ख़र शुदन।

परन्तु यहां कठिनाई यह है कि मनुष्य के लिए नीचे जाना सरल बात है मानो एक स्वाभाविक बात है जैसा कि तुम देखते हो एक पत्थर ऊपर को बहुत कठिनाई से जाता है तथा किसी दूसरे के बल का मुहताज है परन्तु नीचे की ओर स्वयं गिर जाता है और किसी के बल का मुहताज नहीं।

(बराहीन-ए-अहमदिया, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 21, पृ. 26-27)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक: एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

अब जानना चाहिए कि ख़ुदा तआला ने इस आयत में जो ऐतराज़ करने वाले ने ऐतराज़ के रूप में प्रस्तुत की है केवल डराने के निशानों का वर्णन किया है जैसा कि आयत

وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا (बनी इस्राईल - 60)

से स्पष्ट हो रहा है। क्योंकि यदि ख़ुदा तआला के कुल निशानों को प्रकोपी निशानों में ही सीमित समझ कर इस आयत के यह मायने किए जाएँ कि हम समस्त निशानों को केवल डराने के उद्देश्य से ही भेजा करते हैं तथा अन्य कोई उद्देश्य नहीं होता। तो यह मायने स्पष्ट तौर पर ग़लत हैं। जैसा कि अभी वर्णन हो चुका है कि निशान दो उद्धेश्यों से भेजे जाते हैं या डराने के उद्देश्य से या ख़ुशख़बरी के उद्देश्य से। इन्हीं दो प्रकारों को पवित्र क़ुर्आन और बाइबल प्रकट कर रही है। अत: जबकि निशान दो प्रकार के हुए तो उपरोक्त आयत में जो शब्द अलआयात है (जिसके मायने वे निशान) बहरहाल इसी तावील पर सही तौर पर चरितार्थ होगा कि निशानों से प्रकोपी निशान अभिप्राय हैं क्योंकि यदि यह मायने न लिए जाएँ तो इस से यह अनिवार्य आता है कि समस्त निशान जो ख़ुदा तआला की क़ुदरत के तहत दाख़िल हैं। डराने के प्रकार में ही सीमित हैं हालाँकि केवल डराने के प्रकार में ही समस्त निशानों का निर्भर समझना घटना के सर्वथा विरुद्ध है जो न अल्लाह की किताब की दृष्टि से और न बुद्धि की दृष्टि से और न किसी पवित्र हृदय की अन्तरात्मा की दृष्टि से सही हो सकता है।

अब चूंकि इस बात का साफ़ निर्णय हो गया कि निशानों के दो प्रकारों से में केवल डराने के निशानों का उपरोक्त आयतों में ज़िक्र है तो यह दूसरी बात प्रतिप्रश्न की शेष रही कि क्या इस आयत के (जो وَمَا مَنَعَنَا है) यह मायने समझने चाहिए कि डराने का कोई निशान ख़ुदा तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर प्रकट नहीं किया या यह मायने समझने चाहिए कि डराने के निशानों में से वे निशान प्रकट नहीं किए गए जो पहली उम्मतों को दिखाए गए थे या यह तीसरे मायने विश्वसनीय हैं कि दोनों प्रकार के डराने के निशान आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर प्रकट होते रहे हैं उन विशेष प्रकार के कुछ निशानों के अतिरिक्त जिन को पहली-पहली उम्मतों ने देखकर झुठला दिया था और उनको चमत्कार नहीं समझा था।

अत: स्पष्ट हो कि विवादित आयतों पर दृष्टि डालने से पूर्ण सफ़ाई के साथ खुल जाता है कि पहले और दूसरे मायने किसी भी तरह सही नहीं। क्योंकि उपरोक्त आयत के निशानों से यह समझ लेना कि नाना प्रकार के वे समस्त डराने वाले निशान जो हम भेज सकते हैं और समस्त वे परे से परे अज़ाब के निशान जिनके भेजने पर असीमित तौर पर हम सामर्थ्यवान हैं इसलिए हम ने नहीं भेजे कि पहली

उम्मतें उस को झुठला चुकी हैं यह मायने सर्वथा ग़लत हैं। क्योंकि स्पष्ट है कि पहली उम्मतों ने उन्हीं निशानों को झुठलाया जो उन्होंने देखे थे कारण यह कि झुठलाने के लिए यह अवश्य है कि जिस चीज़ को झुठलाया जाए प्रथम उसका अवलोकन भी हो जाए। जिस निशान को अभी देखा ही नहीं उसको झुठलाना कैसा हालाँकि अदृष्ट निशानों में से ऐसे उत्तम श्रेणी के निशान भी अल्लाह तआला की क़ुदरत के अन्तर्गत हैं जिसको कोई मनुष्य झुठला न सके और सब गर्दनें उनकी ओर झुक जाएँ। क्योंकि ख़ुदा तआला प्रत्येक निशान दिखाने पर सामर्थ्यवान है और फिर चूंकि अल्लाह तआला की क़ुदरत के निशान असीमित और अनंत हैं तो फिर यह कहना क्योंकर सही हो सकता है कि सीमित समय में वे सब देखे भी गए और उनको झुठला भी दिया। सीमित समय में तो वही चीज़ देखी जाएगी जो सीमित होगी। बहरहाल इस आयत के यही मायने सही होंगे कि जो कुछ निशान पहले काफ़िर देख चुके थे और उन्हें झुठला चुके थे उनका दोबारा भेजना व्यर्थ समझा गया जैसा कि प्रसंग भी इन्हीं मायनों को बताता है अर्थात् इस अवसर पर जो समूद की ऊंटनी का अल्लाह तआला ने वर्णन किया है वह एक भारी प्रसंग इस बात पर है कि इस स्थान पर पहले और रद्द किए हुए निशानों का ज़िक्र है जो डराने के निशानों में से थे और यही तीसरे मायने हैं जो सही और दुरुस्त हैं।

फिर इस स्थान पर एक और बात न्यायवानों के सोचने के योग्य है जिस से उन पर प्रकट होगा कि आयत وَمَا مَنَعَنَآ اَنۡ نُّرۡسِلَ بِالۡاٰيٰتِ الخ (बनी इस्राईल- 60) से चमत्कारों का सबूत ही पाया जाता है न कि चमत्कारों का निषेध, क्योंकि 'अलआयात' के शब्द पर जो अलिफ़ लाम आया है वह नहव के नियमों के अनुसार दो बातों से खाली नहीं या कुल के मायने देगा या विशेष के यदि कुल के मायने देगा तो यह मायने किए जायेंगे कि हमें कुल चमत्कारों के भेजने से कोई बात बाधक नहीं हुई परन्तु अगर अगलों का उन्हें झुठलाना और यदि विशेष के मायने देगा तो यह मायने होंगे कि हमें उन विशेष निशानों के भेजने से (जिन्हें इनकारी मांगते हैं) कोई बात बाधक नहीं हुई परन्तु यह कि उन निशानों को अगलों ने तो झुठलाया। बहरहाल इन दोनों स्थितियों में निशानों का आना सिद्ध होता है। क्योंकि अगर यह मायने हैं कि हम ने समस्त निशानियाँ पहली उम्मतों के झुठलाने के कारण नहीं भेजीं तो इस से कुछ निशानों का भेजना सिद्ध होता है जैसे यदि कोई कहे कि मैंने अपना समस्त माल ज़ैद को नहीं दिया तो इस से साफ़ सिद्ध होता है कि उस ने अपने माल का कुछ भाग ज़ैद को अवश्य दिया है और यदि यह मायने लें कि कुछ विशेष निशान हम ने नहीं भेजे तो भी कुछ अन्य का भेजना सिद्ध है। उदाहरणतया यदि कोई कहे कि कुछ विशेष चीज़ें मैंने ज़ैद को नहीं दी तो इस से साफ़ पाया जायेगा कि कुछ अन्य अवश्य दी हैं। बहरहाल जो व्यक्ति पहले इस आयत के अगले पिछले प्रसंगों की आयतों को देखे कि कैसे वे दोनों ओर से अज़ाब के निशानों का किस्सा बता रही हैं और फिर एक दूसरी नज़र उठाए और विचार करे कि क्या यह अर्थ सही और उचित हैं कि ख़ुदा तआला के समस्त निशानों और अद्भुत कामों की जो उसकी अनन्त क़ुदरत से यदा-कदा पैदा होने वाले और असीमित हैं पहले लोग अपने सीमित युग में झुठला चुके

शेष पृष्ठ 21 पर

सम्पादकीय

गणतन्त्र दिवस

26 जनवरी का दिन हमारे देश में गणतन्त्रता दिवस के रूप में हर्षो उल्लास से मनाया जाता है। आज के दिन ही हमारे देश का संविधान देश में लागू किया गया था जिसे डा भीम राव अंबेडकर जी ने तैयार किया था। हमारा संविधान बताता है कि हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष देश है जिसमें सभी धर्मों को बराबर सम्मान और अधिकार प्राप्त हैं। अत: हम सब देश वासियों को चाहे वे किसी भी धर्म के मानने वाले हों, किसी भी जाति से उनका संबंध हो एक दूसरे धर्म या जाति के लोगों को सम्मान की नज़र से देखना चाहिए धार्मिक झगड़ों का देश में अन्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब क़ादियानी ने अपने स्वर्गवास से कुछ दिन पहले पुस्तक "पैग़ाम-ए-सुलह" (मई, 1908 ई) लिखी। जिस में आप ने अपनी अंतिम वसीयत के रूप में हिंदुस्तान की दो बड़ी क़ौमों हिन्दुओं और मुसलमानों को परस्पर मित्रता और सहिष्णुता पैदा करने की एक दर्दभरी अपील की है। आप लिखते हैं :

यह बात किसी पर छुपी नहीं कि एकता एक ऐसी बात है कि वे विपत्तियाँ जो किसी प्रकार से दूर नहीं हो सकतीं और वे संकट जो किसी उपाय से हल नहीं हो सकते वे एकता से हल हो जाते हैं। अत: एक बुद्धिमान से (यह बात) दूर है कि एकता की बरकतों से स्वयं को वंचित रखे। हिन्दू तथा मुसलमान इस देश में दो ऐसी क़ौमें हैं कि यह एक असंभव विचार है कि किसी समय जैसे हिन्दू एकत्र होकर मुसलमानों को इस देश से बाहर निकाल देंगे या मुसलमान एकत्र होकर हिन्दुओं को देश से निष्कासित कर देंगे अपितु अब तो हिन्दू-मुसलमान का परस्पर चोली-दामन का साथ हो रहा है। यदि एक पर कोई संकट आए तो दूसरा भी उसमें भागीदार हो जाएगा और यदि एक क़ौम दूसरी क़ौम को मात्र अपने व्यक्तिगत अभिमान और बड़प्पन से तिरस्कृत करना चाहेगी तो वह (स्वयं) भी तिरस्कार से सुरक्षित नहीं रहेगी और यदि उनमें से कोई अपने पड़ोसी के साथ सहानुभूति करने में असमर्थ रहेगा तो उसकी हानि वह स्वयं भी उठाएगा। जो व्यक्ति तुम दोनों क़ौमों में से दूसरी क़ौम के विनाश की चिन्ता में है उसका उदाहरण उस व्यक्ति के समान है जो एक टहनी पर बैठ कर उसी को काटता है। आप लोग अल्लाह तआला की कृपा से शिक्षित भी हो गए अब वैर को त्याग कर प्रेम में उन्नति करना शोभनीय है और निर्दयता को त्याग कर सहानुभूति धारण करना आप की बुद्धिमत्ता के यथायोग्य है। संसार के संकट भी एक रेगिस्तान की यात्रा है जो बिल्कुल गर्मी और सूर्य के ताप के समय की जाती है। इसलिए इस दुर्गम मार्ग के लिए आपसी सहमति के उस शीतल जल की आवश्यकता है जो इस जलती हुई अग्नि को शीतल कर दे और प्यास के समय मरने से बचाए। ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आपको सुलह (मैत्री) के लिए बुलाता है।" (पैग़ाम-ए-सुलह पृष्ठ-7-8)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की काव्य रचना

इत्मामे हुज्जत

(समझाने का अन्तिम प्रयास पूरा करना)

निशाँ को देख कर इन्कार कब तक पेश जाएगा
अरे इक और झूठों पर क़यामत आने वाली है।

ये क्या आदत है क्यों सच्ची गवाही को छुपाता है
तेरी इक रोज़, ऐ ग़ुस्ताख़[7] शामत आने वाली है।

तेरे मकरों[8] से ऐ जाहिल ! मेरा नुक्साँ नहीं हरगिज़
कि यह जाँ आग में पड़ कर सलामत[9] आने वाली है।

अगर तेरा भी कुछ दीं है बदल दे जो मैं कहता हूँ
कि इज़्ज़त मुझ को और तुझ पर मलामत[10] आने वाली है।

बहुत बढ़ बढ़ के बातें की हैं तूने और छुपाया हक़[11]
मगर ये याद रख इक दिन निदामत[12] आने वाली है।

ख़ुदा रुस्वा[13] करेगा तुम को, मैं एजाज़[14] पाऊँगा
सुनो ए मुनकिरो ! अब ये करामत आने वाली है।

ख़ुदा ज़ाहिर करेगा इक निशाँ पुर[15] रौबो पुर हैबत
दिलों में इस निशाँ से इस्तकामत[16] आने वाली है।

ख़ुदा के पाक बन्दे दूसरों पर होते हैं ग़ालिब
मेरी ख़ातिर ख़ुदा से ये अलामत[17] आने वाली है।

(ततिम्मा हक़ीक़तुल वह्यी, पृ. 157,
प्रकाशन 1907 ई., रूहानी ख़ज़ायन, भाग 22, पृ. 595)

---

7. ठट्ठा करने वाला। 8. चालें। 9. सुरक्षित 10. डाँट डपट। 11. सत्य। 12. शर्मिन्दगी। 13. बदनाम। 14. सम्मान। 15. भयावह। 16. दृढ़ता। 17. चिन्ह।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 23.12.2022 मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

क़ादियान तथा कुछ अफ्रीक़ा के देशों में जलसा सालाना के शुभारम्भ पर जमाअत के दोस्तों को ईमान, यकीन, निष्ठा व आज्ञाकारिता में उन्नति करने के उपदेश

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:-

आज से क़ादियान तथा कुछ अफ्रीक़ी देशों में जलसा सालाना शुरु हो रहे हैं। अल्लाह तआला प्रत्येक देश के जलसे को हर एक दृष्टि से बरकत वाला बनाए। इन्शाल्लाह तआला इतवार को जलसे के अन्तिम दिन क़ादियान के जलसे से सम्बोधन होगा, इसमें अन्य शेष सात आठ अफ्रीक़ी देश भी शामिल होंगे। कोशिश होगी कि उन सब देशों को एम टी ए के द्वारा सीधे जोड़ दिया जाए। आज उन देशों में सब एक जगह एकत्र होकर ख़ुत्बः सुन रहे होंगे इस लिए इस वातावरण में मैंने उचित समझा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में वे बातें पेश करूँ जिनमें आप अलै. की नियुक्ति एवं जमाअत के उद्देश्य के बारे में बयान किया गया है और विभिन्न उपदेश दिए हैं। अनेकों नौमुबाय तथा नई पीढ़ी के अहमदी इन जलसों में शामिल होंगे, अतः ये बातें उनके लिए भी जानना अनिवार्य हैं ताकि ये इन दिनों में अपने ईमान व यक़ीन तथा निष्ठा एवं वफ़ा में उन्नति करने का प्रयास करें और अल्लाह तआला की सहायता मांगते हुए आप अलै. की नियुक्ति तथा अपने दायित्वों का बोध प्राप्त करें।

अहमदिया सिलसिले की स्थापना का उद्देश्य क्या था तथा क्यूँ उस ज़माने में इसकी स्थापना आवश्यक थी? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह ज़माना कैसा मुबारक ज़माना है कि ख़ुदा तआला ने इन विकट दिनों में केवल अपनी कृपा से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व को अभिव्यक्त करने के लिए यह पवित्र निश्चय फ़रमाया कि प्रोक्ष से इस्लाम की सहायता एवं समर्थन की व्यवस्था फ़रमाई तथा एक सिलसिले को स्थापित किया। जो लोग इस्लाम की चिंता अपने दिलों में रखते हैं वे बताएँ कि क्या कोई ज़माना इस ज़माने से बढ़ कर हुआ है जो इतने अपशब्दों के साथ

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनादर किया गया हो। क़ुर्आन शरीफ़ का अपमान होता हो। क्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुछ सम्मान अल्लाह तआला को स्वीकार नहीं था जो इतने अपशब्दों पर भी वह कोई आसमानी सिलसिला क़ायम न करता तथा इन इस्लाम के विरोधियों के मुंह बन्द करके आप स. की प्रतिष्ठा एवं पवित्रता को दुनिया में फैलाता, जबकि स्वयं अल्लाह तआला एवं उसके फ़रिश्ते आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते हैं। अत: इस अभिव्यक्ति के लिए अल्लाह तआला ने इस सिलसिले को स्थापित किया। अतएव यह हमारा कर्तव्य है, जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना तथा इस सिलसिले में शामिल हुए कि जहाँ अपनी अवस्थाओं को ठीक करें वहाँ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भी भेजें तथा इन दिनों में विशेष रूप से दरूद की ओर ध्यान रहना चाहिए। जब हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अधिक से अधिक दरूद भेजेंगे तो उस उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा एवं सम्मान को क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी नियुक्ति का लक्ष्य बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि मुझे भेजा गया है ताकि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करूँ तथा क़ुर्आन शरीफ़ की सच्चाई दुनिया को दिखाऊँ। यह सब काम हो रहा है किन्तु जिनकी आँखों पर पट्टी है वे इसको नहीं देख सकते यद्यपि अब यह सिलसिला सूरज की तरह रौशन हो गया है तथा इसकी आयतों व निशानों के लोग इतने अधिक साक्षी हैं कि उनको एक जगह एकत्र किया जाए तो उनकी संख्या इतनी हो जाए कि धरती के सीने पर किसी राजा की इतनी सेना नहीं है। विश्व के विभिन्न देशों में आज जलसों में हज़ारों अहमदियों का सम्मिलित होना भी इन निशानों में से एक निशान है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले की सच्चाई की इतनी अधिक अवस्थाएँ मौजूद हैं कि उन सबको बयान करना भी सरल नहीं, चूंकि इस्लाम का अत्यधिक अपमान किया गया था इस लिए अल्लाह तआला ने उसी निरादर की तुलना में इस सिलसिले का महानता को दिखाया है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि यह ज़माना भी आध्यात्मिक लड़ाई का है, शैतान के साथ युद्ध चल रहा है, शैतान अपने समस्त हथियारों तथा षड्यन्त्रों को लेकर इस्लाम के किले पर आक्रमणकारी हो रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को पराजित कर दे किन्तु ख़ुदा तआला ने इस समय शैतान के अन्तिम युद्ध में उसको सदैव के लिए पराजित करने हेतु इस सिलसिले को स्थापित किया है। अत: यह बात प्रत्येक अहमदी को अपने कत्र्तव्य की ओर ध्यान दिलाती है। आप फ़रमाते हैं- मुबारक वह जो इसको पहचानता है। अब थोड़ा ज़माना है अभी सवाब मिलेगा, किन्तु निकट भविष्य में ही वह समय आता है कि अल्लाह तआला इस सिलसिले की सच्चाई को सूर्य से भी अधिक उज्जवल करके दिखाएगा, वह समय होगा कि ईमान सवाब का कारण नहीं होगा तथा तौबा का द्वार बन्द होने के समान होगा। अत: भाग्यशाली हैं वे लोग जो आज मसीह मौऊद अलै. को क़बूल कर रहे हैं तथा विरोध का सामना करके अल्लाह तआला के प्यार को प्राप्त करने वाले बन रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि केवल मान लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि मूल उद्देश्य यह है कि एक पवित्र बदलाव पैदा हो, शुद्ध तौहीद पर क़दम मारने वाले इंसान बनें, तब फिर अल्लाह तआला के $फज़ूल बढ़ते चले जाते हैं। जो व्यक्ति अल्लाह तआला से डर कर उसके मार्ग की खोज में प्रयत्न करता है और दुआएँ करता है तो अल्लाह तआला अपने क़ानून-

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

अर्थात- और वे लोग जो हमारे बारे में कोशिश करते हैं, हम अवश्य उन्हें अपनी राहों की ओर हिदायत देंगे (सूर: अंकबूत-९२) के अनुसार अपने मार्ग दिखा देता है। जब तक इंसान पवित्र मन एवं सच्चाई के साथ समस्त अवैध रास्तों को अपने ऊपर बन्द करके ख़ुदा तआला के आगे हाथ नहीं फैलाता उस समय तक वह इस योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन उसको मिले। ख़ुदा तआला देखता है कि यदि उसका दिल हर प्रकार की लालसा से बचा हुआ है तो फिर उसके वास्ते अपनी रहमत के द्वार खोलता है तथा उसे अपनी छावँ में लेकर स्वयं उसके पालन पोषण का दायित्व लेता है, और यदि उसके दिल के किसी कोने में भी शिर्क एवं बिदअत (दीन में नई बातें घडऩा) का कोई अंश भी होता है तो उसकी दुआओं तथा इबादतों को उसके मुंह पर उलटा मारता है।

सहाबियों रज़ी. के जैसा नमूना अपनाने तथा उन जैसी निष्ठा एवं वफ़ पैदा करने की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया तथा इसके समर्थन में सैंकड़ों निशान प्रकट किए हैं तो उद्देश्य यह है कि यह जमाअत सहाबियों की जमाअत हो और फिर से खैरुलक़ुरून (सर्वथा भलाई) का ज़माना आ जावे। जो लोग इस सिलसिले में दाखिल हों, चूँकि वे وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ में दाखिल होते हैं इस लिए वे झूठी गतिविधियों के कपड़े उतार दें और अपना पूरा ध्यान ख़ुदा तआला की ओर करें।

इस्लाम पर तीन ज़माने गुज़रे हैं, एक क़ुरूने सलासा (तीसरा ज़माना) इसके बाद फेजे आवज (बिगाड़) का ज़माना जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि न वे मुझमें से हैं तथा न मैं उनसे हूँ और तीसरा ज़माना मसीह मौऊद अलै. का ज़माना है जो वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना है और وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूर: जुम्अ:४) स्पष्ट ज़ाहिर करता है कि कोई ज़माना ऐसा भी जो सहाबियों के आदर्शों के विरुद्ध है अर्थात उनके कर्म विभिन्न हैं। इस हज़ार साल के चलते इस्लाम अति कठिनाईयों का शिकार रहा, दीन बिगड़ता गया तथा कुछ लोगों के अतिरिक्त सबने इस्लाम को छोड़ दिया और अनेकों अनेक सम्प्रदाय पैदा हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब अल्लाह तआला ने निश्चय किया है कि एक विशाल समूह को पैदा करे जो सहाबियों का गिरोह कहलाए मगर चूँकि ख़ुदा तआला का विधान यही है कि उसके द्वारा स्थापित सिलसिले में धीरे धीरे प्रगति हुआ करती है इस लिए हमारी जमाअत की उन्नति भी धीरे धीरे एवं खेती के समान होगी तथा वे उद्देश्य एवं लक्ष्य उस बीज के समान हैं जो ज़मीन में बोया जाता है, जो कि अभी अति दूर हैं जिन पर अल्लाह तआला इसको पहुंचाना चाहता है, वे प्राप्त नहीं हो

सकते जिनकी स्थापना अल्लाह तआला का लक्ष्य है। तौहीद की स्वीकृति, अल्लाह की स्तुति तथा अपने भाईयों के हक़ अदा करने में एक विशेष रंग हो। अतएव ये हैं वे उद्देश्य जिनको पाने के लिए हमें चेष्टा करनी चाहिए और तभी जमाअत की उन्नति भी हम देखेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुर्आन करीम को विशेष ध्यान तथा समझ कर पढऩे की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ़ ने पहली किताबों एवं नबियों पर उपकार किया है जो उनकी शिक्षाओं को, जो कथाओं के रंग में थीं, इलमी रंग दे दिया। मैं सच कहता हूँ कि कोई व्यक्ति इन कथाओं एवं कहानियों से मुक्ति नहीं पा सकता जब तक कि वह क़ुर्आन शरीफ़ को न पढ़े क्यूँकि क़ुर्आन शरीफ़ की ही शान है कि वह एक निर्णायक कथन है। हमारे विरोधी केवल इसी कारण हमारे विरोध में तेज़ हैं कि हम क़ुर्आन शरीफ़ को जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया, वह पूर्णत्या प्रकाश, विवेक एवं सत्य की पहचान है, वैसा ही दिखाना चाहते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ को अधिकता के साथ एक दर्शन-शास्त्र समझ कर पढ़ो। अत: इसके भावार्थ एवं अर्थ एवं व्याख्या की ओर हर एक अहमदी को ध्यान देना चाहिए। अत: हमारा काम यह है कि आप अलै. के उपदेशों के अनुसार कर्म करें, यह अनिवार्य बात है अन्यथा बैअत का कोई औचत्य नहीं है। फ़रमाते हैं कि अब इस समय तुमने तौबा की है अब इस समय तुमने तौबा की है, अब भविष्य में ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि इस तौबा से अपने आपको तुमने कितना साफ किया है। हर समय इस्तिगफ़ार करते रहें। आजकल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की दुआ बहुत पढऩी चाहिए-

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمۡنَاۤ اَنۡفُسَنَا٭ وَاِنۡ لَّمۡ تَغۡفِرۡ لَنَا وَتَرۡحَمۡنَا لَنَکُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِیۡنَ

यह दुआ पहले से ही क़बूल हो चुकी है। मूर्छता के साथ जीवन व्यतीत मत करो। जो व्यक्ति मूर्छित होकर जीवन व्यतीत नहीं करता, कदाचित आशा नहीं कि वह किसी असहनीय शक्ति द्वारा आघात में पड़े। कोई कठिनाई अल्लाह की आज्ञा के बिना नहीं आती। जैसे मुझे यह दुआ इलहाम हुई थी-

رب کل شی خادمك رب فاحفظنی وانصرنی وارحمنی

फ़रमाया- यह भी दुआ पढ़ो। अत: शैतान से बचते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने का हमें प्रयत्न करना चाहिए। अतएव दुनिया का हर एक अहमदी इस बात पर विचार करे कि क्या हम वे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें बनाना चाहते हैं, यदि नहीं तो हमें हर समय इसके लिए कोशिश और दुआ करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में मुकर्रम फ़ज़ल अहमद डोगर साहब कारकुन जामिअ: अहमदिय: यू.के., मुकर्रम मलिक मंसूर अहमद उमर साहब मुरब्बी सिलसिला रबवा और मुकर्रम ईसा जोज़फ साहब मुअल्लिम सिलसिला गैम्बिया के देहान्त पर उनके सद्धर्णन तथा जमाअती सेवाओं का वर्णन करते हुए जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

किसी जानकारी हेतु टोल फ्री नम्बर अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान- 1800 103 2131

☆ ☆ ☆

एक मुसीबत किसी के लिए निश्चित होती है जो दान-पुण्य तथा पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से टल सकती है

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी (मसीह मौऊद) अलैहिस्सलाम अपनी महान पुस्तक "हक़ीक़तुल वह्यी" में लिखते हैं :

"समस्त अहले सुन्नत अपितु समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम की इस पर सहमति है क्योंकि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी ख़ुदा तआला की ओर से एक विपत्ति किसी के लिए निश्चित होती है जो दान-पुण्य तथा पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से टल सकती है, अन्तर केवल इतना है कि यदि ख़ुदा तआला इस विपत्ति को केवल अपने ज्ञान में रखे तथा अपनी वह्यी के माध्यम से अपने किसी रसूल पर प्रकट न करे तब तो वह केवल मुक़द्दर विपत्ति कहलाती है जो ख़ुदा तआला की इरादे में छुपी होती है और यदि अपनी वह्यी के माध्यम से अपने किसी रसूल को उस विपत्ति की सूचना दे दे तब वह भविष्यवाणी हो जाती है तथा संसार की समस्त क़ौमें इस बात पर सहमति रखती हैं कि आने वाली विपत्तियां चाहे वे भविष्यवाणी के रूप में प्रकट की जाएं और चाहे केवल ख़ुदा तआला की इरादे में छुपी हों वे दान-पुण्य, पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से टल सकती हैं। तभी तो लोग संकट के समय में दान-पुण्य किया करते हैं अन्यथा व्यर्थ कार्य कौन करता है। समस्त नबियों की इस पर सहमति है कि दान-पुण्य तथा पश्चाताप एवं क्षमा-याचना से विपत्ति का निवारण होता है और मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि प्राय: ख़ुदा तआला मेरे या मेरी सन्तान के बारे में या मेरे किसी मित्र के बारे में एक आने वाली विपत्ति की सूचना देता है और जब उसके निवारण के लिए दुआ की जाती है तो फिर दूसरा इल्हाम होता है कि हम ने उस विपत्ति को दूर कर दिया। अत: यदि इस प्रकार से अज़ाब के वादे की भविष्यवाणी का घटित होना आवश्यक है तो मैं बीसियों बार झूठा बन सकता हूं और यदि हमारे विरोधियों एवं अशुभचिन्तकों को इस प्रकार से झुठलाने की रुचि है, यदि वे चाहें तो मैं उन्हें इस प्रकार की कई भविष्यवाणियां और फिर उनके स्थगन की सूचना दे दिया करूं। हमारी इस्लामी तफ़्सीरों (व्याख्याओं) में तथा बाइबल में भी लिखा है कि एक बादशाह के बारे में समय के नबी ने भविष्यवाणी की थी कि उसकी आयु पन्द्रह दिन रह गई है, परन्तु वह बादशाह रात भर रोता रहा, तब उस नबी को दोबारा इल्हाम हुआ कि हमने पन्द्रह दिन को पन्द्रह वर्ष के साथ बदल दिया है। यह क़िस्सा जैसा कि मैंने लिखा है हमारी पुस्तकों तथा यहूदियों और ईसाइयों की पुस्तकों में भी मौजूद है। अत: क्या तुम यह कहोगे कि वह नबी जिसने बादशाह की आयु के बारे में केवल पन्द्रह दिन बताए थे और पन्द्रह दिन के पश्चात् मृत्यु की सूचना दी थी वह अपनी भविष्यवाणी में झूठा निकला। यह ख़ुदा तआला की दया है कि दण्ड देने के वादे की भविष्यवाणियों में निरस्त होने का मामला ख़ुदा की ओर से जारी है, यहां तक कि जो नर्क में हमेशा रहने का वादा पवित्र क़ुर्आन में काफ़िरों के लिए है वहां भी यह आयत मौजूद है - إِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ. إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ

अर्थात् काफ़िर हमेशा नर्क में रहेंगे सिवाए इसके कि तेरा रब्ब चाहे। क्योंकि वह जो चाहता है उसके करने पर

समर्थ है परन्तु स्वर्ग वासियों के लिए ऐसा नहीं कहा क्योंकि वह वादा है दण्ड की धमकी नहीं है।
अन्त में मैं बहुत बल देकर और बड़े, दावे से और बड़ी बुद्धिमत्ता से यह कहता हूं कि मेरी भविष्यवाणियों पर जो-जो आरोप डॉ. अब्दुल हकीम ख़ान और उसके सहपंथी मौलवियों ने किए हैं मैं दिखा सकता हूं कि दृढ़संकल्प नबियों में से कोई ऐसा नबी नहीं जिसकी किसी भविष्यवाणी पर इन्हीं आरोपों के समान कोई आरोप न हो और मैं केवल यूनुसअ. की घटना प्रस्तुत नहीं करूंगा अपितु हज़रत मूसा और हज़रत मसीह और समस्त नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों में या ख़ुदा की वाणी में उसका उदाहरण दिखाऊंगा, किन्तु मैं यह सुनना चाहता हूं कि क्या इस समय ये समस्त लोग इन सब नबियों को छोड़ने के लिए तैयार हैं और क्या वे इस बात के लिए तत्पर बैठे हैं कि इस प्रमाण के प्रस्तुत करने के पश्चात् जिस प्रकार वे मुझे गालियां देते हैं उन्हें भी गालियां देंगे और जिस प्रकार कि मुझे झूठा ठहराया है उन्हें भी झूठा ठहराएंगे? हे नादानो ! और आंखों के अन्धो ! अपना अंजाम ख़राब करते हो। खेद तुम क्यों जानबूझ कर अग्नि में गिरते हो और तुम क्यों संयम और ईमान से इतने दूर चले गए कि तुम्हारे हृदय में यह भय भी नहीं रहा कि यह आरोप किस-किस किस पवित्र और पुनीत नबी पर आएंगे। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है-

إِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ وَإِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ...

अर्थात् यदि यह नबी झूठा है तो स्वयं तबाह हो जाएगा क्योंकि ख़ुदा झूठे के कार्य को गन्तव्य तक नहीं पहुंचाता। कारण यह कि इससे सच्चे और झूठे का मामला परस्पर संदिग्ध हो जाएगा और यदि यह रसूल सच्चा है तो उसकी कुछ दण्ड के वादे से सम्बद्ध भविष्यवाणियां अवश्य घटित होंगी। अत: इस आयत में जो "कुछ" का शब्द है स्पष्ट तौर पर उसमें यह संकेत है कि सच्चा रसूल जो दण्ड के वादे से संबंधित भविष्यवाणियां करता है तो यह आवश्यक नहीं है कि वे सभी प्रकट हो जाएं। हां यह आवश्यक है कि उनमें से कुछ प्रकट हो जाएं जैसा कि इस आयत में है يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ अत: आंख खोलकर देखो कि वे अज़ाब की कुछ भविष्यवाणियां जो मेरी ओर से प्रकाशित हुई थीं उनमें से किस शक्ति और प्रतिष्ठा के साथ लेखराम के बारे में भविष्यवाणी पूरी हुई जिसके सम्बन्ध में यह भी बताया गया था कि वह साधारण मृत्यु से नहीं मरेगा अपितु ख़ुदा का प्रकोप किसी प्रहार से उसका अन्त करेगा तथा यह भी बताया गया था कि ईद के समीप उसकी मृत्यु की घटना होगी तथा यह भी संकेत किया गया था कि उसकी घटना के पश्चात् देश में ताऊन फैलेगी तथा यह भी बताया गया था कि यह केवल भविष्यवाणी नहीं अपितु यह घटना मेरी बद्दुआ का एक परिणाम होगा क्योंकि उसके अपशब्द बहुत बढ़ गए थे। अत: वह ख़ुदा जो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को नष्ट करना नहीं चाहता उसका प्रकोप लेखराम पर उतरा और उसे भयानक अज़ाब के साथ तबाह किया।

अत: विचार करना चाहिए कि अहमद बेग के बारे में जो मुझे झुठलाने के लिए कटिबद्ध था और दिन-रात उपहास करता था, किस स्पष्टता से भविष्यवाणी ने अपना प्रकटन किया और वह निर्धारित समय सीमा के अन्दर टायफायड से होशियारपुर के अस्पताल में मृत्यु का शिकार हो गया, उसके परिजनों में उसकी मृत्यु से

कोलाहल मच गया। यह वही अहमद बेग है जिसके दामाद के बारे में हमारे विरोधी अब तक मातम और शोक मना रहे हैं कि क्यों नहीं मरता। नहीं जानते कि दाईं टांग तो इस भविष्यवाणी की अहमद बेग ही था, जिसने अचानक युवावस्था की मौत मरने से सिद्ध कर दिया कि भविष्यवाणी सच्ची है और फिर जैसा कि भविष्यवाणी में उल्लेख था कि अहमद बेग की मृत्यु के निकट उसके परिजनों की और मौतें भी होंगी। यह बात भी घटित हो गई तथा अहमद बेग का एक लड़का और दो बहनें उन्हीं दिनों में मृत्यु का शिकार हो गए। अब हमारे विरोधी बताएं कि आयत يُّصِبُكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ का वाक्य इस पर चरितार्थ हुआ या नहीं। अत: जबकि मेरी कुछ अज़ाब की भविष्यवाणियों के संबंध में उन्हें स्वयं इक़रार करना पड़ता है कि पूर्ण स्पष्टता के साथ पूरी हो गईं तो फिर मुसलमान होने का दावा करने के बावजूद क्यों यह आयत उनकी दृष्टि में नहीं रहती अर्थात् يُّصِبُكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ क्या गुप्त तौर पर इस्लाम से विमुखता की तैयारी तो नहीं ? और यह कहना कि भविष्यवाणी के पश्चात् अहमद बेग की लड़की के निकाह के लिए प्रयास किया गया तथा लालच दिया गया और पत्र लिखे गए। ये बड़े विचित्र आरोप हैं। सत्य है मनुष्य द्वेष की तीव्रता के कारण अन्धा हो जाता है। कोई मौलवी इस बात से अनभिज्ञ न होगा कि यदि ख़ुदा की वह्यी किसी बात को बतौर भविष्यवाणी प्रकट कर दे तथा संभव हो कि मनुष्य किसी उपद्रव एवं अवैध या अनुचित ढंग के बिना उसे पूरा कर सके। तो अपने हाथ से उस भविष्यवाणी का पूरा करना न केवल वैध अपितु मसनून है तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वयं अपना कर्म इसके प्रमाण के लिए पर्याप्त है और फिर हज़रत उमररज़ि. का एक सहाबी को कड़े पहनाना दूसरा प्रमाण है तथा इस्लाम की उन्नति के लिए भी पवित्र क़ुर्आन में एक भविष्यवाणी थी फिर क्यों इस्लाम की उन्नति के लिए भरसक प्रयास किया गया था, यहां तक कि लोगों के हृदयों को आकृष्ट करने के लिए कई लाख रुपया दिया गया और यहां तो भूमि आदि के लिए मूल प्रेरणा स्वयं अहमद बेग की ओर से थी।

फिर विचार करना चाहिए कि एक ओर तो ये दो तीन भविष्यवाणियां हैं जो हमारे विरोधी अपने अंधेपन के कारण बार-बार प्रस्तुत करते हैं जिनकी झूठी गन्दगी अब्दुल हकीम को भी खानी पड़ी। दूसरी ओर मेरे समर्थन में ख़ुदा तआला के निशानों का एक दरिया बह रहा है जिस से ये लोग अपरिचित नहीं हैं और शायद ही कोई महीना ऐसा गुज़रता होगा कि जिसमें कोई निशान प्रकट न हो। उन निशानों को कोई नहीं देखता और न यह देखते हैं कि ख़ुदा क्या कह रहा है। एक ओर प्लेग व्यवहारिक रूप से से कह रही है कि प्रलय के दिन निकट हैं तथा दूसरी ओर अद्भुत एवं विलक्षण भूकम्प जो कभी इस प्रकार से इस देश में नहीं आए थे सूचित कर रहे हैं कि पृथ्वी पर ख़ुदा का प्रकोप भड़क रहा है तथा प्रतिदिन ऐसी नवीन से नवीन आपदाएं आ रही हैं कि जिन से विदित होता है कि संसार के ढंग परिवर्तित हो गए हैं तथा प्रकट होता है कि ख़ुदा तआला कोई बड़ी आपदा प्रदर्शित करना चाहता है। और प्रत्येक आपदा जो आती है मुझे पहले से उसकी सूचना दी जाती है और मैं समाचार पत्र, पत्रिकाओं या विज्ञापन के द्वारा उसे प्रकाशित कर देता हूं। इसलिए मैं बार-बार कहता हूं कि पश्चाताप करो कि पृथ्वी पर इतनी आपदाएं आने वाली हैं कि जैसे सहसा एक काली आंधी आती है और जैसा कि फ़िरऔन के युग में हुआ कि पहले थोड़े निशान दिखाए गए और अन्तत: वह निशान दिखाया गया जिसे देख कर फ़िरऔन को भी कहना पड़ा कि -

اٰمَنْتُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِیْ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا اِسْرَآءِیْلَ

ख़ुदा चार तत्त्वों में से प्रत्येक तत्त्व में निशान के तौर पर एक तूफ़ान पैदा करेगा और संसार में बड़े-बड़े भूकम्प आएंगे, यहां तक कि वह भूकम्प आ जाएगा जो प्रलय का नमूना है। तब प्रत्येक क़ौम में मातम पड़ेगा क्योंकि उन्होंने अपने समय को नहीं पहचाना। यह अर्थ ख़ुदा के इस इल्हाम के हैं कि -

दुनिया में एक डराने वाला (नज़ीर) आया पर दुनिया ने उसे स्वीकार न किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई को प्रकट कर देगा। यह पच्चीस वर्ष पूर्व का इल्हाम है जिसका बराहीन अहमदिया में उल्लेख किया गया है तथा इन दिनों में पूरा होगा जिसके कान सुनने के हैं वह सुने।

यह तो हमने उन दो-तीन भविष्यवाणियों का उल्लेख किया है जिन पर हमारे विरोधी मौलवी और उन्हीं का नया शिष्य अब्दुल हकीम खान बार-बार आरोप लगाते हैं। अब हम उनके मुकाबले पर यह दिखाना चाहते थे कि ख़ुदा तआला के आकाशीय निशान हमारी गवाही के लिए कितने हैं परन्तु खेद कि यदि वे सभी लिखे जाएं तो हज़ार भागों की पुस्तक में भी उनकी गुंजायश नहीं हो सकती। इसलिए हम केवल नमूने के तौर पर उनमें से एक सौ चालीस निशानों का उल्लेख करते हैं। उनमें से कुछ वे पूर्व नबियों की भविष्यवाणियां हैं जो मेरे पक्ष में पूरी हुईं, कुछ इस उम्मत के महापुरुषों की भविष्यवाणियां हैं, कुछ ख़ुदा तआला के वे निशान हैं जो मेरे द्वारा प्रकट हुए। चूंकि मेरी भविष्यवाणियों पर उन भविष्यवाणियों को सामयिक प्राथमिकता है इसलिए उचित समझा गया कि लिखित तौर पर भी उन्हीं को प्राथमिकता दी जाए। ये समस्त भविष्यवाणियां एक ही श्रृंखला में क्रमानुसार लिखी जाएंगी और वे ये हैं :-

(1) पहला निशान :-

قال رسُول الله صلى الله عليه وسلّم انّ الله يبعث لهٰذه الامة على رأس كُلّ مائة سنة من يجدّد لها دينها۔ (رواه ابو داؤد)

अर्थात् ख़ुदा प्रत्येक शताब्दी हिज्री के सर पर इस उम्मत के लिए एक व्यक्ति का भेजेगा जो उसके लिए धर्म को ताज़ा करेगा और अब इस शताब्दी हिज्री का चौबीसवां वर्ष समाप्त होने जा रहा है, संभव नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वादा भंग हो। यदि कोई कहे कि यह हदीस सही है तो बारह शताब्दियों के मुजद्दिदों के नाम बताएं।

इसका उत्तर यह है कि यह हदीस उम्मत के उलेमा में मान्य चली आ रही है। अब यदि मेरे दावे के समय इस हदीस को बनावटी हदीस भी कहा जाए तो उन मौलवी लोगों से यह भी सत्य है कि कुछ बड़े-बड़े मुहद्दसीन ने अपने-अपने युग में स्वयं मुजद्दिद होने का दावा किया है। कुछ ने किसी दूसरे को मुजद्दिद बनाने का प्रयास किया है और यदि यह हदीस सही नहीं तो उन्होंने ईमानदारी से काम नहीं लिया तथा हमारे लिए यह आवश्यक नहीं कि समस्त मुजद्दिदों के नाम याद हों। सभी ज्ञानों पर व्याप्त होने की विशेषता तो ख़ुदा तआला की है, हमारा अर्न्तयामी होने का दावा नहीं परन्तु उतना ही जितना ख़ुदा बताए। इसके अतिरिक्त यह उम्मत विश्व के एक बड़े भाग में फैली हुई है और ख़ुदा की नीति कभी किसी देश में मुजद्दिद पैदा करती है और कभी किसी देश में। अत: ख़ुदा के कार्यों का पूर्ण ज्ञान कौन रख सकता है और कौन उसके ग़ैब (परोक्ष) को परिधि

में ले सकता है। भला यह तो बताओ कि हज़रत आदम से लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक प्रत्येक क़ौम में कितने नबी गुज़रे हैं। यदि तुम यह बता दोगे तो हम मुजद्दिद भी बता देंगे। स्पष्ट है कि ज्ञान के अभाव से किसी वस्तु का अभाव अनिवार्य नहीं होता। यह बात भी अहले सुन्नत में सर्व सम्मत है कि इस उम्मत का अन्तिम मुजद्दिद मसीह मौऊद है जो अन्तिम युग में प्रकट होगा। अब समीक्षा योग्य बात यह है कि यह अन्तिम युग है अथवा नहीं ? यहूदी और ईसाई दोनों क़ौमें इस पर सहमत हैं या नहीं कि यह अन्तिम युग है यदि चाहो तो पूछ कर देख लो। प्लेग फैल रही है भूकम्प आ रहे हैं हर प्रकार के विलक्षण विनाश आरंभ हैं क्या यह अन्तिम युग नहीं ? इस्लाम के सदाचारी लोगों ने भी इस युग को अन्तिम युग ठहराया है तथा चौदवहीं शताब्दी हिज्री में से भी तेईस वर्ष गुज़र गए हैं। अत: यह ठोस तर्क इस बात पर है कि यही समय मसीह मौऊद के प्रकट होने का है और मैं ही वह एकमात्र व्यक्ति हूं जिसने इस शताब्दी हिज्री के प्रारंभ होने से पूर्व दावा किया और मैं ही वह एकमात्र व्यक्ति हूं जिस के दावे पर पच्चीस वर्ष गुज़र गए और अब तक जीवित हूं और मैं ही वह एक हूं जिसने ईसाइयों तथा अन्य जातियों को ख़ुदा के निशानों के साथ दोषी किया। अत: जब तक मेरे इस दावे के मुकाबले पर इन्हीं विशेषताओं के साथ कोई दूसरा दावेदार प्रस्तुत न किया जाए तब तक मेरा यह दावा प्रमाणित है कि वह मसीह मौऊद जो अन्तिम युग का मुजद्दिद है वह मैं ही हूं। युग में ख़ुदा तआला ने नौबतें (बारियां) रखी हैं। एक वह समय था कि ख़ुदा के सच्चे मसीह को सलीब ने तोड़ा तथा उसे घायल किया था और अन्तिम युग में यह निर्धारित था कि मसीह सलीब को तोड़ेगा अर्थात् आकाशीय निशानों से कफ़्फ़ार: की आस्था को संसार से समाप्त कर देगा। प्रतिफल के लिए शिकायत नहीं।

(2) दूसरा निशान - सही दार-ए-क़ुत्नी में यह एक हदीस है कि इमाम मुहम्मद बाकर कहते हैं -

انّ لمهدينا اٰيتين لم تكونا منذ خلق السماوات والارض ينكسف القمر لاوّل ليلةٍ من رمضان وتنكسف الشمس فی النصف منه۔

अनुवाद - हमारे महदी के लिए दो निशान हैं और जब से कि धरती और आकाश को ख़ुदा ने पैदा किया ये दो निशान किसी अन्य मामूर और रसूल के समय में प्रकट नहीं हुए उनमें से एक यह है कि प्रतिज्ञात महदी के युग में रमज़ान के महीने में चन्द्रमा का ग्रहण उसकी प्रथम रात्रि में होगा अर्थात् तेरहवीं तिथि में और सूर्यग्रहण उसके दिनों में से बीच के दिन में होगा अर्थात् उसी रमज़ान की अट्ठाईसवीं तिथि को तथा ऐसी घटना संसार के प्रारंभ से किसी रसूल या नबी के समय में कभी प्रकट नहीं हुई केवल महदी मा'हूद के समय उसका होना निर्धारित है। अब समस्त अंग्रेज़ी और उर्दू अख़बार तथा समस्त खगोल शास्त्री इस बात के साक्षी हैं कि मेरे युग में ही जिस को लगभग बारह वर्ष का समय बीत चुका है। इस प्रकार का चन्द्र एवं सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में लगा है और जैसा कि एक अन्य हदीस में वर्णन किया गया है। यह ग्रहण दो बार रमज़ान में लग चुका है। प्रथम इस देश में, द्वितीय अमरीका में तथा दोनों बार इन्हीं तिथियों में लगा है जिनकी ओर हदीस संकेत करती है। चूंकि इस ग्रहण के समय में मेरे अतिरिक्त महदी मा'हूद होने का दावेदार संसार में कोई नहीं था और न किसी ने मेरे समान इस ग्रहण को अपने महदी होने का निशान ठहरा कर सैकड़ों विज्ञापन, पत्रिकाएं, उर्दू और फ़ारसी तथा अरबी में विश्व भर में प्रकाशित कीं। इसलिए यह आसमानी निशान मेरे लिए निर्धारित हुआ।

इस पर दूसरा तर्क यह है कि इस निशान के प्रकट होने से बारह वर्ष पूर्व मुझे सूचना दी थी कि ऐसा निशान प्रकट होगा तथा वह सूचना बराहीन अहमदिया में दर्ज होकर इस से पूर्व कि यह निशान प्रकट हो लाखों लोगों में प्रसारित हो चुकी थी।

बड़े खेद की बात है कि हमारे विरोधी सर्वथा द्वेष से यह ए'तिराज़ करते हैं। प्रथम - यह कि हदीस के शब्द ये हैं कि चन्द्र-ग्रहण प्रथम रात्रि में होगा और सूर्य ग्रहण मध्य के दिन में, परन्तु ऐसा नहीं हुआ अर्थात् उनके विचार के अनुसार "चन्द्र-ग्रहण हिलाल की रात्रि को होना चाहिए था जो चन्द्र माह की प्रथम रात्रि है और सूर्य-ग्रहण चन्द्र माह के पन्द्रहवें दिन को होना चाहिए था जो महीने का मध्य दिन है", परन्तु इस विचार में सर्वथा उन लोगों की नादानी है क्योंकि संसार जब से पैदा हुआ है चन्द्र-ग्रहण के लिए ख़ुदा तआला के क़ानून-ए-क़ुदरत में तीन रातें निश्चित हैं अर्थात् तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं तथा चन्द्र-ग्रहण की प्रथम रात्रि जो ख़ुदा तआला के प्रकृति के नियमानुसार है वह चन्द्र माह की तेरहवीं रात्रि है और सूर्य-ग्रहण के लिए तीन दिन ख़ुदा के क़ानून-ए-क़ुदरत में निर्धारित हैं अर्थात् चन्द्र माह का सत्ताईसवां, अट्ठाईसवां और उन्तीसवां दिन। सूर्य ग्रहण के तीन दिनों में से चन्द्र माह के अनुसार मध्य का दिन अट्ठाईसवां दिन है। इसलिए इन्हीं तिथियों में बिल्कुल हदीस के आशय के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा को रमज़ान के महीने में ग्रहण लगा अर्थात् चन्द्र-ग्रहण रमज़ान की तेरहवीं रात्रि में लगा और सूर्य-ग्रहण उसी रमज़ान की अट्ठाईसवें दिन को लगा।

अरब के मुहावरे में प्रथम रात्रि का चन्द्रमा क़मर कभी नहीं कहलाता अपितु तीन दिन तक उसका नाम हिलाल होता है तथा कुछ के निकट सात दिन का हिलाल कहलाता है। दूसरा आरोप यह है कि यदि हम मान लें कि चन्द्रमा की प्रथम रात्रि से अभिप्राय तेरहवीं रात है और सूर्य की मध्य दिन से अभिप्राय अट्ठाईसवां दिन है तो इसमें विलक्षण और अद्भुत बात क्या हुई ? क्या रमज़ान के महीने में कभी चन्द्र ग्रहण तथा सूर्य-ग्रहण नहीं हुआ ? इसका उत्तर यह है कि इस हदीस का यह अभिप्राय नहीं है कि रमज़ान के महीने में कभी ये दोनों ग्रहण इकट्ठे नहीं हुए अपितु अभिप्राय यह है कि किसी नबी या रसूल के दावेदार के समय में ये दोनों ग्रहण कभी एकत्र नहीं हुए जैसा कि हदीस के प्रत्यक्ष शब्द इसी को सिद्ध कर रहे हैं। यदि किसी का यह दावा है कि किसी नुबुव्वत या रिसालत के दावेदार के समय में ये दोनों ग्रहण रमज़ान के महीने में कभी किसी युग में इकट्ठे हुए हैं तो उसका कर्त्तव्य है कि इसका प्रमाण प्रस्तुत करे। विशेष कर यह बात किस को ज्ञात नहीं कि इस्लामी सन् अर्थात् तेरह सौ वर्ष में कई लोगों ने केवल झूठे तौर पर महदी मौऊद होने का दावा भी किया अपितु लड़ाइयां भी कीं, परन्तु कौन सिद्ध कर सकता है कि उनके समय में चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण रमज़ान के महीने में दोनों इकट्ठे हुए थे और जब तक यह प्रमाण प्रस्तुत न किया जाए तब तक नि:सन्देह यह घटना विलक्षण और अद्भुत है क्योंकि विलक्षण उसी को कहते हैं कि उसका उदाहरण संसार में न पाया जाए और केवल हदीस ही नहीं अपितु पवित्र क़ुर्आन ने भी इस की ओर संकेत किया है। देखिए आयत

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ... وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ... (अलक़ियामत - 9,10)

तीसरा यह आरोप प्रस्तुत किया जाता है कि यह हदीस मर्फ़ूअ मुत्तसिल नहीं है केवल इमाम मुहम्मद बाक़िररज़ि. का कथन है। इसका उत्तर यह है कि अहले बैत के इमामों की यही पद्धति थी कि वे अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा

के कारण हदीस के क्रम में नामों के क्रम को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक पहुंचाना आवश्यक नहीं समझते थे। उनकी यह आदत प्रसिद्ध और परिचित है। अत: शिया मत में इस प्रकार की सैकड़ों हदीसें मौजूद हैं और स्वयं इमाम दारे क़ुत्नी ने इसे हदीसों के क्रम में लिखा है। इसके अतिरिक्त यह हदीस एक ग़ैबी (परोक्ष) बात पर आधारित है जो तेरह सौ वर्ष के उपरान्त प्रकट हुई, जिसका सारांश यह है कि जिस समय महदी मौऊद प्रकट होगा उसके युग में रमज़ान के महीने में चन्द्र-ग्रहण तेरहवीं रात्रि को होगा तथा उसी महीने में सूर्य-ग्रहण अट्ठाईसवें दिन होगा और ऐसी घटना महदी मा'हूद के युग के अतिरिक्त किसी दावेदार के युग में नहीं होगी। स्पष्ट है कि ऐसी खुली-खुली परोक्ष की बात बताना नबी के अतिरिक्त अन्य किसी का काम नहीं है। पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है -

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ۔ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ

अर्थात् ख़ुदा अपने ग़ैब (परोक्ष) पर अपने भेजे हुए रसूलों के अतिरिक्त किसी को सूचित नहीं करता। अत: जबकि यह भविष्यवाणी अपने अर्थों की दृष्टि से पूर्ण रूप से घटित हो चुकी तो अब ये कच्चे बहाने हैं कि हदीस कमज़ोर है या इमाम मुहम्मद बाक़िर का कथन है। बात यह है कि ये लोग कदापि नहीं चाहते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कोई भविष्यवाणी पूरी हो या कोई पवित्र क़ुर्आन की भविष्यवाणी पूरी हो। संसार समाप्त होने तक पहुंच गया परन्तु उनके कथनानुसार अब तक अन्तिम युग के संबंध में कोई भविष्यवाणी पूर्ण नहीं हुई तथा इस हदीस से अधिक और कौन सी हदीस सही होगी जिस के सर पर मुहद्दसीन की समीक्षा का भी उपकार नहीं अपितु अपने सही होने को स्वयं प्रदर्शित कर दिया कि वह सत्यता की उच्च श्रेणी पर है। ख़ुदा के निशानों को स्वीकार करना यह और बात है अन्यथा यह महानतम निशान है जो मुझ से पूर्व हज़ारों उलेमा तथा मुहद्दसीन इस के घटित होने के प्रतीक्षक थे तथा मंचों पर चढ़-चढ़कर तथा रो-रो कर उसे याद दिलाय करते थे। अत: सब से अन्त में मौलवी मुहम्मद लखूके वाले इसी युग में इसी ग्रहण के बारे में अपनी पुस्तक "अहवालुल आख़िरत" में एक शे'र लिख गए हैं जिसमें महदी मौऊद का समय बताया गया है और वह यह है -

"तेरहवीं चन्द सतीहवीं सूरज ग्रहन होसी उस साले
अन्दर माह रमज़ाने लिख्या हिक रिवायत वाले"

फिर एक अन्य बुज़ुर्ग जिनका शे'र सैकड़ों वर्षों से प्रसिद्ध चला आता है। वह लिखते हैं :-

दरसने ग़ाशी हिज्री दो क़िरान ख़वाहिद बुवद
अज़ पए महदी व दज्जाल निशां ख़्वाहिद बुवद

अर्थात् चौदहवीं सदी हिज्री के अन्दर जब चन्द्रमा और सूर्य को एक ही महीने में ग्रहण लगेगा तब वह महदी मा'हूद तथा दज्जाल के प्रकट होने का एक लक्षण लगेगा। इस शे'र में चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का वर्ष ठीक प्रकार से लिखा गया है।

3. **तीसरा निशान** : पुश्चल तारा का निकलना है जिसके उदय होने का युग मसीह मौऊद के प्रकट होने का समय निर्धारित था और एक लम्बा समय हुआ कि वह उदय हो चुका है। उसी को देख कर ईसाइयों के कुछ

समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि अब मसीह के आने का समय आ गया।

4. **चौथा निशान** - एक नवीन सवारी का आविष्कार है जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का विशेष लक्षण है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में उल्लेख है -وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ अर्थात् अन्तिम युग वह है जब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी तथा ऐसा ही मुस्लिम की हदीस में है - وليترکن القلاص فلا یسعٰی علیہا۔ अर्थात् उस युग में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी और उन पर कोई यात्रा नहीं करेगा। हज के दिनों में मक्का से मदीना की ओर ऊंटनियों पर यात्रा होती है। अब वह समय बहुत निकट है कि इस यात्रा के लिए रेल तैयार हो जाएगी तब उस यात्रा पर यह चरितार्थ होगा कि وليترکن القلاص فلا یسعٰی علیہا۔

5. **पांचवां निशान** - हज का बन्द होना है जो सही हदीस में आ चुका है कि मसीह मौऊद के समय में हज करना किसी अवधि तक बन्द हो जाएगा। अत: प्लेग के कारण 1899-1900 ई. इत्यादि में यह निशान भी प्रकट हो गया।

6. **छठा निशान** - पुस्तकों एवं लेखों का बड़ी अधिकता से प्रकाशित होना। जैसा कि आयत وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ (अर्थात-और जब अधिकता से पुस्तकों का प्रकाशन किया जाएगा) से ज्ञात होता है क्योंकि छापने की मशीनों के कारण जितनी प्रचुरता के साथ पुस्तकों का प्रकाशन इस युग में हुआ है उसे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।

7. **सातवां निशान** - बड़ी अधिकता के साथ नहरों का जारी किया जाना जैसा कि आयत وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ (अर्थात-और जब समुद्रों को फाड़ा जाएगा) से प्रकट होता है। अत: इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस युग में इतनी प्रचुरता के साथ नहरें जारी हुई हैं जिन की प्रचुरता से नदियां शुष्क हुई जाती हैं।

8. **आठवां निशान** - मनुष्यों के परस्पर संबंधों का बढ़ना और मिलने-जुलने का मार्ग सरल हो जाना जैसा कि आयत وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ (अर्थात-और जब लोगों को आपस में मिल दिया जाएगा) से प्रकट है। अत: रेल और तार के द्वारा यह बात प्रकट हो चुकी है कि मानो संसार ही परिवर्तित हो गया है।

9. **नौवां निशान** - भूकम्पों का निरन्तर आना और उनका बहुत भयंकर होना है जैसा कि आयत : يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ... تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ से स्पष्ट है। अत: संसार में असाधारण भूकम्प आ रहे हैं।

10. **दसवां निशान** - भिन्न-भिन्न प्रकार की आपदाओं से इस युग में लोगों का बड़ी अधिकता से तबाह होना है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की इस आयत का अभिप्राय है -

وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا

अनुवाद - कोई ऐसी बस्ती नहीं जिसे हम महाप्रलय से कुछ समय पूर्व तबाह नहीं करेंगे या किसी सीमा तक उस पर अज़ाब नहीं लाएंगे। अत: यही वह युग है क्योंकि प्लेग और भूकम्प, तूफान, ज्वालामुखी पर्वतों के फटने तथा परस्पर युद्धों से लोग तबाह हो रहे हैं, इसके अतिरिक्त इस युग में विनाश के इतने कारण एकत्र हुए हैं तथा इतनी अधिकता से घटित हुए हैं कि इस सामूहिक अवस्था का उदाहरण किसी पूर्वकाल में नहीं पाया जाता।

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी खज़ाइन जिल्द 22 पृष्ठ 196-207)

☆ ☆ ☆

तहरीक जदीद के 89वें साल के आरंभ का भव्य ऐलान

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

जैसा कि अहबाब जमात को मालूम है कि सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 4 नवंबर 2022 को बमुक़ाम मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यूके अपने बसीरत अफ़रोज़ ख़ुतबा जुमा में तहरीक जदीद के 89वें साल के आरंभ का बाबरकत ऐलान फ़रमाया है।

मेरे भाइयो! ख़ुलफ़ा-ए-किराम की तरफ़ से जारी होने वाली तमाम ऐच्छिक तहरीकात में तहरीक जदीद को ये विशेषता प्राप्त है कि उसे संस्थापक तहरीक जदीद सय्यदना हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने 'जिहाद कबीर' और इस जिहाद में हिस्सा लेने वालों को बदरी सहाबा के सवाब का मुस्तहिक़ क़रार दिया है। साथ ही उसे दीगर तमाम ऐच्छिक चंदों के मुक़ाबला में लाज़िमी चंदा की हैसियत दी है। इस का ज़िक्र करते हुए सय्यदना हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो ने फ़रमाया :

"मैंने इस चंदा को लाज़िमी कर दिया है। जमात के हर मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है कि इस में हिस्सा ले"

(इरशाद हज़रत मुसलेह मौऊद बहवाला रोज़नामा अलफ़ज़ल 5 नवंबर 1963 ई)

चंदा तहरीक जदीद की एहमीयत के ताल्लुक़ से ख़ुलफ़ा-ए-किराम के बहुत से इर्शादात मौजूद हैं। तमाम ऐच्छिक चन्दों में सबसे अहम चंदा "चंदा तहरीक जदीद" है। इस का ज़िक्र करते हुए हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे रहिमहुल्लाह ने फ़रमाया कि :

"चंदा आम के बाद सबसे ज़्यादा अहम तहरीक जो उमूमी तौर पर जमात के लिए जारी फ़रमाई गई है वो तहरीक जदीद का चंदा है क्योंकि उस का ताल्लुक़ सारी दुनिया में इशाअत इस्लाम से है।

(ख़ुतबा जुमा हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह राबे फ़र्मूदा 5 नवंबर 1993)

प्रियजनो! यद्यपि तहरीक जदीद के माली जिहाद में हर फ़र्द जमात को अपने लिए सामर्थ्य अनुसार ज़्यादा क़ुर्बानी पेश करने का मयार ख़ुद तै करने का अधिकार दिया गया है। ताहम ये फ़ैसला करते वक़्त इस बाबरकत इलाही तहरीक 'तहरीक जदीद' की ग़ैर मामूली अज़मत और अहमियत और इस के सपुर्द ला-महदूद अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारीयों को मद्द-ए-नज़र रखने के साथ साथ इस बारे में ख़ुलफ़ा-ए-सिलसिला के इर्शादात को भी मलहूज़ रखना ज़रूरी है। तहरीक जदीद के मयार क़ुर्बानी के ज़िमन में सय्यदना हज़रत मुसलेह मौऊद फ़रमाते हैं :

"पस अगर कोई शख़्स अपनी एक माह की आमद का आधा दे देता है। मिसाल के तौर पर उस की सौ रुपया माहवार आमदनी है तो वो पच्चास रुपये लिखवा दे तो समझा जाएगा कि उसने अच्छी क़ुर्बानी की है और अगर वो एक माह की पूरी आमद यानी सौ के सौ रुपये ही बतौर वाअदा लिखवा दे तो हम समझेंगे कि उसने तकलीफ़ उठा कर क़ुर्बानी की है।' (ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 4 दिसंबर 1953)

अत: आज जबकि दुनिया-भर की जमाअतें तहरीक जदीद के माली जिहाद में एक दूसरे से बढ़कर क़ुर्बानियां पेश कर रही हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने ख़ुतबा

जुमा फ़र्मूदा 4 नवंबर 2022 ई में दुनिया-भर के देशों की परस्पर तुलना की है। इस में हिन्दोस्तान ने छठी पोज़ीशन हासिल की है। अलहम्दु लिल्लाह

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नए साल के वाअदा और वसूली के लिए जमात अहमदिया भारत को नया टार्गेट मर्हमत फ़रमाया है जिसे पूरा करने के लिए वादों में कम अज़ कम 20 फ़ीसद इज़ाफ़ा किया जाना ज़रूरी है। अल्लाह ताला ने अपने फ़ज़ल से चूँकि आपको माली वुसअत के साथ साथ जज़बा-ए-इख़लास और क़ुर्बानी से पूरा-पूरा हिस्सा अता फ़रमाया है इसलिए आप सबकी ख़िदमत में तहदीस नेअमत के तौर पर तहरीक जदीद के जिहाद कबीर में अपने सालाना वादों में कम कम 20% इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) करने की दर्दमंदाना दरख़ास्त है। आपकी ये क़ुर्बानी सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह अन्हो के इरशाद के मुताबिक़ यक़ीनन आप और आपकी औलाद के हक़ में सदक़ा जारीया के सवाब का कारण होगी ।

अल्लाह ताला अपने फ़ज़ल से आप सबको प्यारे आक़ा की नेक तवक़्क़ुआत पर पूरा उतरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और इस के नतीजा में आपको बेशुमार रहमतों और बरकतों का वारिस बनाए। आमीन

वस्सलाम

आपका

वकीलुल माल तहरीक जदीद क़ादियान

पृष्ठ 5 का शेष

हों और फिर एक तीसरी न्यायपूर्ण नज़र से काम लेकर सोचे कि क्या यहाँ भय के निशानों का एक विशेष वर्णन है या ख़ुशख़बरी और दया के निशानों का भी कुछ वर्णन है? और फिर चौथी दृष्टि *अलआयात* के 'अलिफ़ लाम' पर भी डाले कि वह किन अर्थों का लाभ दे रहा है? तो इस चार प्रकार की दृष्टि के बाद सिवाए इसके कि कोई पक्षपात के कारण सत्य से दूर जा पड़ा हो प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्दर से न केवल एक गवाही अपितु हज़ारों गवाहियाँ पाएगा कि इस स्थान पर नकारने का शब्द केवल निशानों की एक विशेष प्रकार को नकारने के लिए आया है जिसका दूसरी प्रकारों पर कोई प्रभाव नहीं अपितु इस से उनका निश्चित होना सिद्ध हो रहा है और इन आयतों में अत्यन्त सफ़ाई से अल्लाह तआला बता रहा है कि इस समय डराने वाले निशान जिन का ये लोग निवेदन करते हैं केवल इस कारण नहीं भेजे गए क्योंकि पहली उम्मतें उनको झुठला चुकी हैं। अत: जो निशान पहले अस्वीकार किए गए अब बार-बार उन्हीं को उतारना कमज़ोरी की निशानी है और असीमित क़ुदरतों वाले की शान से दूर। अत: इन आयतों में यह स्पष्ट संकेत है कि अज़ाब के निशान अवश्य उतरेंगे परन्तु और रंगों में। इसकी क्या आवश्यकता है कि वही निशान हज़रत मूसा के या हज़रत नूह और क़ौम-ए-लूत और आद और समूद के प्रकट किए जाएँ? (एक ईसाई के तीन सवाल और उनके जवाब, पृष्ठ 24-29) शेष..

☆ ☆ ☆

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधी अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की अत्यंत महत्त्वपूर्ण और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा
सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

27 सितंबर 2022-ए- (मंगल के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अदायगी में मस्रूफ़ियत रही।

मुआइना नुमाइश

इसके बाद प्रोग्राम के मुताबिक़ दोपहर एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम से जुड़ी नुमाइश हाल में तशरीफ़ ला कर नुमाइश का मुआइना फ़रमाया। इस नुमाइश को निम्नलिखित 10 हिस्सों में तक़सीम किया गया है।

अल्लाह तआला, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, क़ुरआन-ए-करीम और तराजुम, इमाम महदी के बारे में जुमला मज़ाहिब की भविष्यवाणी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दआवी और निशानात, डाक्टर इलैगज़ेंडर डोई शदीद मुआनिद इस्लाम और उसकी इस्लाम दुश्मनी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुर मआरिफ़ जवाब और दावत मुबाहला, डाक्टर डोई का उरूज और इबरतनाक अंजाम, फ़तह अज़ीम का जारी सफ़र।

इन समस्त दस मज़ामीन को इलेक्ट्रिक रूप में प्रत्येक हिस्सा में एक बड़ी टी.वी स्क्रीन video looping के ज़रीया ज़ाहिर किया गया है। प्रत्येक हिस्सा में टी.वी स्क्रीन के नीचे शीशे के एक showcase में इस हिस्सा के मज़मून के मुताल्लिक़ जुमला नवादिरात रखे गए हैं। इस नुमाइश में जो अहम अश्याय रखी गई हैं इन में डाक्टर डोई के सौ साल पुराने नवादिरात की तसावीर, रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के वे इबतिदाई शुमारे रखे गए हैं जिन में डाक्टर डोई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज दिया था और इस की हलाकत के बारे में भविष्यवाणी फ़रमाई थी। यह 1902 ई., 1905 ई. और 1907 ई. के शुमारे हैं।

डाक्टर डोई के रिसाले "leaves of healing" के वे शुमारे भी रखे गए हैं जिनमें इस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में गंद उछाला था। ये शुमारे इसलिए रखे गए हैं ताकि यह बताया जाए कि डाक्टर डोई के इस बुग़ज़-ओ-इनाद के मुक़ाबला में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ को हथियार के तौर पर पेश किया। 1902 ई. और 1903 ई. के वे असल अख़बारात भी रखे गए हैं जिनमें

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ वे चैलेंज भी रक़म है जो आप ने डोई को संबोधित करते होते हुए दिया था। अख़बारात में library digest और तीन मज़ीद अख़बारात शामिल हैं।

अख़बार boston herald सफ़ा बड़ा कर के 5X7 फुट के साइज़ में दीवार पर आवेज़ां किया गया है जिसकी सुरख़ी (headline) निमंलिखित है "great is mirza ghulam ahmad" हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सैक्शन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम का एक कोट भी शीशे के शोकेस में रखा गया है जो आप अलैहिस्सलाम ज़ेब-ए-तन फ़रमाते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ग़ैरों की आरा में एक काबिल-ए-ज़िक्र emperor ming हैं जिन्हों ने 1573 ई. में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में एक चाइनीज़ ज़बान के अलफ़ाज़ पर मुश्तमिल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह में नज़म लिखी है जो चीन के देश में अढ़ाई हज़ार मसाजिद में मौजूद है इस का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया है।

अख़बार boston herald के 28 जून 1907 ई. के शुमारा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ हज़ूर दीगर पेशगोइयों का वर्णन है जिनमें ज़लाज़िल, दमदार सितारा और चांद सूरज गरहन और ताऊन इत्यादि शामिल हैं। इन सब के अख़बारी नुस्ख़ाजात showcase में रखे गए हैं।

नुमाइश की एक अत्यधिक अहम चीज़ kiosk है जिसमें 160 अख़बारी तराशे जमा किए गए हैं और world map के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को touch करने से ये समस्त तराशाजात 60 इंच की टीवी स्क्रीन पर वाज़िह हो जाते हैं और साफ़ पढ़े जाते हैं। ये समस्त तराशा जात 1902 ई. से लेकर 1909 की दहाई में अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बर्तानिया, असकाट लैंड और इंडिया के अख़बारों में शाय हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान kiosk को launch किया और डाक्टर डोई के ज़िक्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी और डोई के इबरतनाक अंजाम के हवाला से मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के अख़बारात का मुशाहिदा किया। जिनमें alaska nebraska न्यूयार्क और बोस्टन इत्यादि के अख़बार शामिल थे।

नुमाइश में दीवार पर जो मुख़्तलिफ़ टीवी स्क्रीन लगाए गए हैं उनमें एक टी.वी स्क्रीन पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह के14 तराशे ख़ुदबख़ुद मंज़र-ए-आम पर आते हैं और मुख़्तलिफ़ देशों में शाय होने वाले अख़बारात चंद मिनटों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह और तसदीक़ का ऐलान कर रहे होते हैं।

एक टी.वी स्क्रीन 20 अख़बारात के वे तराशे हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के डोई को दीए जाने वाले मुबाहला, चैलेंज का वर्णन है। ये तराशे टी.वी स्क्रीन पर बग़ैर कोई बटन दबाए या टीवी स्क्रीन को touch किए तबदील होते हैं। टी.वी स्क्रीन के सामने हाथ हिला कर इशारा करें तो अगला तराशा जाता है। इस तरह सिर्फ हाथ के इशारा से जो तराशा भी आप देखना चाहते हैं वे आपके सामने आ जाएगा।

एक टी.वी स्क्रीन पर हाथ के इशारा से बदलते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के

वे इक़तेबासात हैं जिनमें ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ के बारे में तालीमात वर्णन की गई हैं। एक कालम पर newyork times की वे इबारत दर्ज है जिसका अनवान rival prophets है। इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुरज़ोर अलफ़ाज़ में डोई को चैलेंज दिया है।

जिस showcase में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट आवेज़ां है इस के ऊपर दीवार पर यह दर्ज है "बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान डोई के नवादिरात देख कर फ़रमाया कि मूसा के ज़माने में फ़िरऔन था जिसकी mummy को महफ़ूज़ किया गया। आज (डोई के) इन नवादिरात को महफ़ूज़ कर के आपने इस निशान को महफ़ूज़ कर लिया है।

नुमाइश का एक हिस्सा क़ुदरत सानिया के हवाला से तैयार किया गया था कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़रीया जमाअत अहमदिया मुसलसल तरक़्क़ी कर रही है तो दूसरी तरफ़ डोई और उसकी जमाअत का वजूद हमेशा के लिए ख़त्म हो चुका है। showcase में खलि़फ़ा की बाअज़ कुतुब रखी गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने यह कुतुब देखकर फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो और ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की कुतुब भी शामिल करें।

चांद सूरज गरहन के हवाला से पुराने अख़बारात के तराशे रखे गए थे 1895 ई. के अख़बारी तराशे देखकर हुज़ूर ने फ़रमाया कि मग़रिब के लिए 1895 ई. में ग्रहण लगा था और अहल-ए-मशरिक़ के लिए 1894 ई. में ग्रहण लगा था।

नुमाइश के आख़िरी हिस्सा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोया "ग़ुलाम अहमद की जय'' को स्क्रीन पर दिखाया गया था। और तबर्रुकात को ज़ाहिर किया गया था। हुज़ूर अनवर ने उसे देखकर फ़रमाया कि "मेरे हाथ में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो तबर्रुकात हैं" हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ में पहनी हुई दोनों अँगूठीयों الیس اللہ بکافٍ عبدہ और "मौला बस" की तरफ़ इशारा किया।

इस नुमाइश का मुकम्मल इंतेज़ाम आदरणीय अनवर महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद और उनकी टीम ने बड़ी मेहनत से किया। आख़िर पर इस टीम के मैंबरान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई।

मस्जिद फ़तह अज़ीम की तख़्ती की निक़ाब कुशाई और मीनार का संग-ए-बुनियाद

नुमाइश के मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बैरूनी दीवार पर लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मीनारा का संग-ए-बुनियाद रखा। शहर की इंतेज़ामिया की तरफ़ से मस्जिद के साथ मीनारतुल मसीह की तर्ज़ पर एक मीनारा तामीर करने की भी मंज़ूरी मिली है। इस की उंचाई 70 फ़ुट होगी।

मस्जिद फ़तह अज़ीम और इस से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर को एक नक़्शा की सूरत में बोर्ड पर

आवेज़ां किया गया था। हुज़ूर अनवर ने यह नक़शाजात देखे। आदरणीय फ़लाहउद्दीन शमस साहिब नायब अमीर यू. एस. ए. ने इस प्राजैक्ट के हवाला से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ उमूर अर्ज़ किए और बताया कि हमारे इस क़ता ज़मीन का कुल रकबह 10 एकड़ है जिसमें से इस वक़्त अढ़ाई एकड़ ज़ेर-ए-इस्तेमाल है। मस्जिद और दफ़ातिर की तामीर है गेस्ट हाऊस की तामीर है एक वसीअ पार्किंग एरिया बनाया गया है और इसी अढ़ाई एकड़ रकबा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मारकीज़ भी लगाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जो बाक़ी साढ़े सात एकड़ रकबा है वह इस नक़्शा के मुताबिक़ किस तरफ़ है तो इस पर मौसूफ़ ने इस हिस्सा की निशानदेही करते हुए बताया कि इस तरफ़ है और इस रकबा पर दरख़्त लगे हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने पार्किंग एरिया के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो अर्ज़ किया गया कि मस्जिद के पार्किंग एरिया में 95 गाड़ियां आ सकती हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर का मुआइना फ़रमाया। नुमाइश हाल के इलावा लाइब्रेरी है। दफ़ातिर में, दफ़्तर सदर जमाअत और लजना के दफ़ातिर शामिल हैं। चिल्डर्न क्लास के लिए भी एक कमरा मुहय्या किया गया है। आडीयो वीडीयो रुम भी है और एक लांडरी रुम भी बनाया गया है। लिफ़्ट की सहूलत भी मुहय्या की गई है। दो स्टोरेज रूमज़ भी हैं।

हुज़ूर अनवर फ़्लोर (basement) में भी तशरीफ़ ले गए जहां एक मल्टी परपज़ हाल (multi purpose hall) तामीर किया गया है। जिसका रकबा 2451 मुरब्बा फुट है। इस वक़्त उसे नमाज़ की अदायगी के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस हाल में 300 अफ़राद नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस हाल में मर्दों और औरतों के लिए अलैहदा अलैहदा वाश रूमज़ बनाए गए हैं और कमर्शीयल किचन भी मौजूद है।

मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

रीलीजन न्यूज़ सर्विस की सहाफ़ी का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू :

रीलीजन न्यूज़ सर्विस (religion news service) की एक सहाफ़ी emily miller हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू करने के लिए आई हुई थीं। मौसूफ़ा के अमरीका में लाखों फालोवरज़ हैं। ये सहाफ़ी ख़ातून मस्जिद फ़तह अज़ीम के पस-ए-मंज़र और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डाक्टर डोई के दरमयान मुबाहला पर एक मज़मून लिख रही हैं।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां इंटरव्यू का प्रोग्राम था।

* इंटरव्यू के आग़ाज़ में जर्नलिस्ट ने पहला सवाल यह किया कि इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए हुज़ूर का यहां आना क्या एहमियत रखता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम जहां भी मस्जिद बनाते हैं उमूमन वहां की जमाअत मुझ से पूछती है कि क्या मेरा वहां आना मुम्किन है? जर्मनी हो या बर्तानिया हो या कोई और हो। covid से

पहले मैं मसाजिद के उद्घाटन के लिए जाया करता था लेकिन यहां zion में एक ख़ास चीज़ है जैसा कि आपने नुमाइश में भी देखा है तो यह भी मुख़्तलिफ़ वजूहात में से एक वजह है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं आम तौर पर मसाजिद का उद्घाटन करता हूँ और वहां अपनी जमाअत के अफ़राद से मिलता हों। इस तरह उनकी हौसला-अफ़ज़ाई होती है और मैं उन्हें नसाएह करता हूँ और बताता हूँ कि मस्जिद की तामीर का मक़सद किया है। यह न हो कि आप सिर्फ उसको आरिज़ी तौर पर या कुछ ख़ास होने की वजह से मनाएं बल्कि असल यह है कि हमारी ज़िंदगी और हमारे दीन का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत करना है मसाजिद इसी मक़सद के लिए तामीर की जाती हैं और मैं अपने लोगों को याद दिलाता हूँ कि उन्हें सिर्फ मस्जिद की तामीर पर ख़ुश नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें हक़ीक़त में यह एहसास होना चाहिए कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है, तो इस तरह उनकी राहनुमाई होती है और फिर वे अपने आप में तबदीलीयां पैदा करते हैं और समझते हैं कि उनके फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं।

*जर्नलिस्ट ने दूसरा सवाल किया कि इस मस्जिद का नाम फ़तह अज़ीम है इस से क्या मुराद है? फ़तह किस की है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अगर आप ये नुमाइश देखी तो आपको समझ आएगी कि मसीह मुहम्मदी और तथाकथित मसीह का मुक़ाबला कैसे शुरू हुआ, इसलिए यही दुआओं का मुक़ाबला था जिसका ऐलान सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने किया। पहले आप ने डोई को नसीहत की कि तुम अम्बिया और मुक़द्दस लोगों के ख़िलाफ़ ये ग़लीज़ ज़बान न प्रयोग करो लेकिन वे आपके ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करता रहा। यहां तक कि इस ने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा कि पूरी उम्मत मुस्लिमा और प्रत्येक मुस्लमान तबाह हो जाएँ। इस पर जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने फ़रमाया कि पूरे मज़हब को तबाह करने के बजाए हम दो लोग हैं इसलिए एक दूसरे के ख़िलाफ़ दुआ करते हैं। और फिर दुआओं का मुक़ाबला शुरू हो गया था और ख़ुदा तआला ने आपको बताया कि इस मुबाहला में फ़तह तुम्हारी होगी और फिर बिलआख़िर ऐसा ही हुआ। तो "फ़तह अज़ीम" का यह नाम आपको अल्लाह तआला ने बताया था। इसलिए जब हमने ये मस्जिद बनाई तो जमाअत ने इस का नाम रखने की दरख़ास्त की तो इस पर मैंने कुछ नाम तजवीज़ किए और जमाअत से कहा कि कोई ऐसा नाम मुंतख़ब करें जिसको अमरीका के बाशिंदे आसानी से बोल सकते हूँ लेकिन मुक़ामी जमाअत ने इसरार किया कि यह नाम "फ़तह अज़ीम'' इस मस्जिद के लिए मुनासिब है फिर मैंने उसकी मंज़ूरी दी तो इस तरह इस मस्जिद का नाम "फ़तह अज़ीम" रखा गया।

*फिर जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि अमरीका के बाशिंदों के लिए इस मुबाहला का वाक़िया जानना क्यों ज़रूरी है? इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह केवल अमरीका के बाशिंदों के लिए ही अहम नहीं है बल्कि यह सब के लिए अहम है। प्रत्येक अमरीकी तारीख़ में दिलचस्पी नहीं रखता लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बहुत शौक़ीन हैं वे सोचते हैं कि उन्हें अपने मुल्क में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों की तारीख़ और मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और उनके पस-ए-मंज़र के बारे में जानना चाहिए। इस लिए जो लोग दिलचस्पी रखते हैं वह यहां आएं और हमारी तारीख़ जानें और यह कि किसी एक मज़हब की फ़तह नहीं है दरअसल लोगों

को यह बताने की फ़तह है कि ख़ुदा का सच्चा बंदा कौन है और यह कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ कोई गाली गलौज नहीं करनी चाहिए। हमें समस्त धर्मों का एहतिराम करना चाहिए। यही क़ुरआन-ए-करीम की तालीम है और यही बात सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने कही है कि तुम एक दूसरे का एहतेराम करो और यह कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद अल्लाह की इबादत है इस लिए आपका जो भी तरीक़ा है जिस मज़हब को भी आप मानते हैं आप इस असल मक़सद के मुताबिक़ अमल करो लेकिन दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ ग़लीज़ ज़बान या गाली ग्लोच का प्रयोग न करें। तो अब जब हम इस तारीख़ को लोगों के सामने वर्णन करेंगे। तारीख़ से दिलचस्पी रखने वालों और मज़हब से दिलचस्पी रखने वालों को मालूम होगा कि यह सब कुछ ऐसा ही हुआ।

*इसके बाद जर्नलिस्ट के इस सवाल पर कि आपके मुताबिक़ लोगों पर इस मुबाहला के क्या असरात होंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा काम इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना है और इस्लाम कहता है कि देन में कोई जबर नहीं है और आप किसी को अपना मज़हब तबदील करने पर मजबूर नहीं कर सकते और जो लोग इस्लाम क़बूल नहीं करते वे कम अज़ कम ये समझ लेंगे कि इस्लाम हमें एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने और अपने फ़राइज़ अदा करने का कहता है। बांई सिलसिला अहमदिया ने कहा कि मेरे आने का मक़सद लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाना और अल्लाह तक पहुंचाना है उन्हें यह समझाना है कि अल्लाह की इबादत कैसे करनी है और अल्लाह की इबादत क्यों करनी है और अपने ख़ालिक़ के सामने झुकना है और दूसरा मक़सद लोगों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने का एहसास दिलाना है लोगों को एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करना चाहिए और यही बात क़ुरआन-ए-करीम सिखाता है और यही हम मानते हैं और यही है जिसकी हम तब्लीग़ करते हैं।

* फिर जर्नलिस्ट ने आख़िरी प्रशन यह किया कि क्या अब दुनिया में organized religion अर्थात मुनज़्ज़म मज़हब का कोई किरदार है क्या मज़हब अमन की आवाज़ बन सकता है?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम कहते हैं कि दीन का उद्देश्य किसी को डराना नहीं है जैसा कि मैं पहले आपको बता चुका हूँ कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक दो उद्देश्यों के लिए दुनिया में ज़ाहिर हुए और आपने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात को ज़िंदा करने का दावा किया और यह तालीम दो उसूलों पर मुश्तमिल है हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद। इसलिए अगर आप इन दोनों फ़रायज़ को जानते हैं तो फिर हम से डरने की ज़रूरत नहीं। हम ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। हम जिसकी तब्लीग़ करते हैं इस पर अमल करते हैं हम इस किस्म के जुनूनी मुल्ला, शरपसंद नहीं हैं जो समाज की शांति ख़राब कर रहे हैं।

हम कहते हैं कि हमें अमन से रहना चाहिए और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। यहां तक कि क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि तुम एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करो। क़ुरआन-ए-करीम यह भी कहता है कि तुम बुत परस्तों के ख़िलाफ़ कोई बदज़बानी भी न करो क्योंकि वह इंतेक़ाम में अल्लाह के

ख़िलाफ़ वही ज़बान प्रयोग करेंगे। इसलिए डरने की ज़रूरत नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जहां तक मस्जिद का उद्देश्य है और हम किस तरह रहते हैं हम यहां क्या करने जा रहे हैं में अपने ख़िताब में भी वर्णन करूँगा।

यह इंटरव्यू 6 बजकर 20 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के मुताबिक़ फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज शाम के सैशन में 23 फ़ैमिलीज़ के 152 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी अफ़राद ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट अता फ़रमाए। आज ज़ाइन (zion) की जमाअत के इलावा indiana oshk osh chicago milwauk ee iowa seattle si licon valley की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। बाअज़ फ़ैमिलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। सयाटिल से वालेला 2014 मील और सिलीकोनवैली से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2190 मील का सफ़र तै कर के आई थीं। मुलाक़ातों का प्रोग्रा 8 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। (शेष आगे ...)

रिपोर्ट : आदरणीय अदुल माजिद ताहिर साहिब (ऐडीशनल वकीलअल्-तिबशीर् लंदन, यू.के) (अख़बार बदर उर्दू 13 अक्तूबर 2022)

☆ ☆ ☆

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)
Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

يُنبِتُ لَكُم بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِن كُلِّ
الثَّمَرَاتِ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ○ (النحل ۱۱)
Prop : Sk. Ishaque
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FFT Fruits
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لیے نفرت کسی سے نہیں
PRAN
MANGO JUICEPAK
Marie
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

R
REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal.com
flipkart.com
amazon.com
Paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Mob: 9647960851
9082768330

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Branch: Aroti Tola Po muluk Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो खुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

बैअत के साथ अच्छे कर्म करना भी आवश्यक है

तीन लोगों ने आपके हाथ पर **बैअत** की, **बैअत** के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने **बैअत** करने वालों को संबोधित करके कहा कि: आदमी को केवल यही नहीं मानना चाहिए कि यह जमात सच्ची है और इतना मानने से उसे बरकत मिल जाएगी, आजकल मुसीबतों का जमाना है प्लेग हर और फैल रही है केवल मानने से अल्लाह ताला खुश नहीं होता जब तक अच्छे कर्म न हों। कोशिश करो कि जब इस जमात में सम्मिलित हुए हो तो अच्छे बनो, संयमी बनो, हर एक बुराई से बचो। यह समय दुआओं में गुजारो, रात और दिन खुदा के समक्ष रोते गिड़गिड़ाने में लगे रहो। जब मुसीबत का समय होता है तो खुदा का क्रोध भी भड़का हुआ होता है ऐसे समय में दुआ करो, रोओ-गिड़गिड़ाओ, दान पुण्य करो, ज़बानों को नरम रखो, इस्तगफ़ार को अपनी दिनचर्या बनाओ, नमाज़ों में दुआएं करो। कहावत मशहूर है: "मिन्नतें करता हुआ कोई नहीं मरता" केवल मान लेना इंसान के काम नहीं आता, अगर इंसान मान कर फिर उसे लापरवाह तो जाए तो उसे फायदा नहीं होता। फिर उसके बाद यह शिकायत करना कि **बैअत** से फायदा नहीं हुआ, व्यर्थ है। खुदा ताला बातों से राजी नहीं होता।

(मलफूज़ात जिल्द 3)

☆ ☆ ☆